جولائی ۲۰۱۳ء

ماہنامہ شعاعِ عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَکِتَابٌ مُبِینٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

July 2013





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

●●●

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com
E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

जुलाई 2013ई०

शाबानुल मुअज़्ज़म व रमज़ानुल मुबारक 1434हि०

ज़िन्दगी का सिस्टम

y§kd %आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

l Eikn %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

क़िस्त : 14

, d t :+jhckr

नमाज़ के वक़्त के फ़ायदे के बयान में मैने कारोबारी लोगों को सामने रखा है, क्योंकि यही वह लोग है जो ज़िन्दगी के मक़सद को पूरा करते हैं और अपने काम धाम की बरकतों से फ़ायदा उठाते है, उन चलते–फिरते मुर्दा लोगों की बात नहीं है जिन्होने सुस्ती के कारण अपनी ज़िन्दगी को मौत का नाम बना लिया है, ये लोग अगर नमाज़ें भी पढ़ें तो कोई ख़ास अच्छाई नहीं है। क़ुर्आने मजीद में जिन लोगों की तारीफ़ की गयी है वह ये है कि–''

वह लोग जिनको व्यापार, और बिकरी (खरीदना–बेचना) ज़िक्रे ख़ुदा की याद ध्यान से बे परवाह नहीं करती। ''इमाम (अ0) ने बताया , कि इसका ये मतलब नहीं है कि वह कारोबार और लेन देन नहीं करते, नहीं ये ग़लत है बल्कि इसका मतलब ये है कि वह कारोबार और लेन देन करते हैं और फिर भी नमाज़ और खुदा के ध्यान से बेपरवाह नहीं होते।

यही जीवन खुदा की नज़र में इज़्ज़त वाला है और इसे क़ुर्आन ने सराहा है।

uekt -dkvle , yku] ; kuh ^vt ku*

जिस तरह नमाज़ ख़ुदा को याद दिलाने का माध्यम है, उसी तरह नमाज़ की याद दिलाने और बेख़बर लोगों को बाख़बर बनाने के लिए अज़ान का हुक्म हुआ है।

सुन्नी लोगों ने अज़ान के बयान के सिलसिले को खुदा की ''वही (खुदा की तरफ़ से फ़रिश्ते के ज़रिये नबी को भेजा गया पैग़ाम) से बिल्कुल अलग कर लिया है। उनके नज़दीक ये अज़ान का आधार कुछ सहाबियों (रसूल स. के साथियों) के सपने पर है।

मगर शीया मज़हब की रवायतों के अनुसार इबादत (भक्ति) का कोई हिस्सा वही से अलग नहीं हो सकता और उसका आधार सपने व ख़्याल पर बिल्कुल नहीं होता, फिर अगर सपना भी रसूल (सं0) का होता तो उसे 'वही' की एक शाखा कहा जा सकता था। एक आम आदमी का सपना उस पर रसूल (स0) की तरफ़ से उसे इबादत का हिस्सा बना देना, ये नहीं हो सकता। हमारे यहां इस बारे में जो रवायत (कथन) है वह नीचे दी जा रही है, इसी से आपको मालूम हो जाएगा कि अधिक मुसलमानों को इस मसले में 'वही' के इन्कार की क्या ज़रूरत पड़ी।

मन्सूर बिन हाज़िम की रवायत है कि इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) फ़रमाते है। – ''जिब्राईल (ख़ुदा की तरफ़ से भेजा गया फ़रिश्ता) अज़ान लेकर रसूल मुहम्मद साहब के पास आये तो उस वक़्त आपका सर हज़रत अली सुपुत्र अबु तालिब (अ0) की गोद में था, जिब्राईल ने अज़ान कही और एक़ामत कही, जब आप (स0) ने आँख खोली तो पूछा, या अली (अ0) तुम ने सुना ? कहाः ''हाँ, याद भी कर लिया''? कहाः ''जी हाँ,'' आपने कहा बिलाल को बुला लाओ, उन्हें सिखा दें'' उसके बाद बिलाल को अज़ान और एक़ामत सिखाई।''

इस वाक़ेये में हज़रत अली (अ0) के कुछ आ जाने ने लोगों को इस बात पर उकसाया कि वह सिरे से अज़ान के लिए 'वही' को माने ही ना, चाहे इससे रसूल (स0) की शान और स्तर को ठेस ही पहुँच जाए।

इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) से रवायत है कि – आपने उस गुट पर लानत (फिटकार की) जिसका ये ख़्याल है कि रसूल (स0) ने 'अज़ान' को अब्दुल्लाह बिन ज़ैद से सीखा है। आप (अ0)फ़रमाते थे–'' वही ' तो तुम्हारे पैग़म्बर (स0) पर आती थी और फिर भी तुम समझते हो कि अज़ान को अब्दुल्लाह बिन ज़ैद से लिया गया।'' (यानि सीखा है)

दूसरे धर्मों में भी भक्ति, पूजा के वक़्त का एलान करने के कुछ तरीक़े हैं, जैसे शंख या बाजा, राजाओं के यहॉ नौबत खाना नगाडा आदि। आपके यहाँ

कारख़ानों में मज़दूरों को काम करने का बुलावा देने के लिए भोंपू की आवाज़ होती है मगर वह सब अपने मक़सद के लेहाज़ से आवाज़ रखने के बाद भी चुप हैं यानि जो न जानता हो उसको वह ख़ुद नहीं बता सकते कि वह किस चीज़ का बुलावा दे रहे हैं, उनका मक़सद क्या है और किस जमाअ़त (वर्ग) से सम्बन्ध रखते हैं।

मगर इस्लामी नमाज़ का आम एलान जो 'अज़ान' के ज़रिए से होता है वह अपने सब मक़सद को ख़ुद ही बताता है, इसमें सिर्फ़ आवाज़ ही नहीं बल्कि शब्द भी हैं जो अपने गुट के सारे गुण हैं।

सबसे पहले ''अल्लाहो अकबर'' है, यानि ख़ुदा सबसे बड़ा है, इसमें अल्लाह की बेहद महानता का मानना है। 'कबीर' के माने बड़ा और 'अकबर' के माने किसी दूसरी चीज़ से ज़्यादा बड़ा, इसमें किसी और का ध्यान छिपा तो ज़रूर है मगर अल्लाहो अकबर के शब्द में उस और की कोई बात नहीं है, इससे इसके माने में ज़्यादा विस्तार पैदा हो गया है। अगर आप ग़ौर करें तो इन्सान दूसरी ताक़तो से प्रभावित होकर बहुत सी बातें अपने अन्तःकरण और सच्चाई के ख़िलाफ़ कर डालता है, और वह बातें जिनसे कोई दूसरे की ओर या उसके सामने झुकता है, वह तीन चीज़ें हैं——

1—लालच 2—डर 3—सामने वाले की महानता का एहसास।

लालच से दूसरे की और झुकता है, डर से दूसरे के सामने झुकता है, और बड़ाई के एहसास से उसकी ओर भी मेल पैदा होता है और उसके सामने सर भी झुकता है। मगर किसी चीज़ की लालच उसी समय इन्सान को प्रभावित करेगी जब उससे बड़ी कोई लालच सामने न हो। एक डर तभी प्रभावित करेगा जब उससे बड़ा कोई डर न हो। किसी की बड़ाई की धाक उसी वक़्त हो सकती है जब उससे बड़ी महानता सामने न हो।

इस्लाम ने चाहा है कि वह सारी भावनायें/मानसिकताएं जो किसी को सच्चाई के ख़िलाफ़ अ़मल करने पर बेबस करते हैं, उनसे आगे एक ऐसा एहसास पैदा किया जाए जो उन सबसे ऊंचा हो।

लेकिन 'अकबर' शब्द के बाद अगर किसी चीज़ की बात आ जाती तो माने सीमित हो जाते क्योंकि उस चीज़ की ओर झुकाव या तो लालच से होता या डर से या फ़िर बड़ाई की वजह से समझा जाता, मगर जब किसी चीज़ की बात नहीं है तो अब उसके अर्थ सीमित नहीं रह गए।

इसका मतलब ये है कि अगर तुम दुनिया में किसी चीज़ से आस रखते हो तो याद रखो कि सबसे बड़ी आस ख़ुदा से है, अगर किसी का डर रखते हो तो निश्चय ही सबसे बड़ा डर ख़ुदा से हो सकता है और अगर किसी की निजी बड़ाई से प्रभावित हो तो सबसे बड़ा ख़ुदा है, इसलिए हर वक़्त उसको राज़ी ख़ुश रखने का ख़्याल रखो और दुनिया की किसी चीज़ का ख़्याल न करो। इससे इन्सान में भरापुरापन, आज़ादी, अपने पर भरोसा और स्वाभिमान (अपने का रख रखाव) पैदा होगा और वह दुनिया में किसी ग़लत ज़ज़्बे से प्रभावित नहीं होगा और सदा सच्चाई कहेगा और सत्य का पुजारी रहेगा।

अब देखिए कि नमाज़ और उससे जुड़ी बातों में इस 'तकबीर' (अल्लाहु अकबर) पर सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया गया है। ये अज़ान में भी सबसे पहले है, इक़ामत और नमाज़ में भी सबसे पहले है। नमाज़ में एक हालत (Position) से दूसरी स्थिति में जाते वक़्त भी तकबीर रखी गई है और नमाज़ के ख़त्म होने के बाद भी तीन बार तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहने का हुक्म दिया गया है।

ख़ुद अज़ान में गिनती के लेहाज़ से भी इसे बढ़त दी गयी है अगर दूसरी चीज़ें दो बार कहना है तो 'अल्लाहो अकबर' शुरू में चार बार और अज़ान के अन्त में दो बार।

इस्लाम के आदि काल में इसकी बड़ाई का ध्यान रखने वाले अज़ान और एक़ामत के अलावा भी अवसर बे अवसर इसका इस्तेमाल करते थे और उसमें इतनी धाक होती थी कि असत्य वाले थर्रा जाएं।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (अ0) का चलन था कि जिहाद (धर्म संग्राम) में जब किसी को वध करते थे तो तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहते थे। चुनांचे ''लैलतुल हरीर'' में आपकी तकबीरों की गिनती से ही मारे जाने वालों की संख्या का अंदाज़ा किया गया।

मगर याद रखिए कि हर चीज़ का ग़लत इस्तेमाल उसके महत्व को ख़त्म कर देता है। मुसलमानों ने ऐसे—ऐसे ग़लत मौक़ों पर यह नारे लगाये कि अब

उसकी कोई साख नहीं रही, हद ये है कि कहा जाता है कि 'आशूरा' (दसवीं मुहर्रम जिस दिन इमाम हुसैन शहीद हुए) ह0 इमाम हुसैन (अ0) के वध पर भी तकबीरें कही जा रही थीं। एक अरब शायर ने कहा है– ''(ऐ हुसैन (अ0) ये लोग आप के क़त्ल पर तकबीरे (अल्लाहु अकबर) कह रहे हैं, जबकि इन्होंने आपके साथ साथ खुद तकबीर व तहलील (ला इलाह इल्लल्लाह) को वध कर दिया। आज भी मुसलमानों की ज़बानों पर अल्लाहु अकबर के नारे सुनाई देते हैं कुछ उन अवसरों पर जब उनके हमले मुसलमानों ही पर होते हैं, जिसकी इस्लाम निन्दा करता है और धर्म मज़हब इस पर गुहार करते हैं।

अच्छा इसे जाने दीजिए, मुसलमानों के ग़लत चलन की ज़िम्मेदारी इस्लाम पर तो नहीं है और उससे किसी तरह 'अल्लाहु अकबर' की उस महानता और अहमियत पर कोई असर नहीं पड़ता जो सच में उसकी है।

चार मर्तबा 'अल्लाहु अकबर' कहने के बाद दूसरा टुकड़ा है– *'' अशहदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाह''* ये तौहीद (एकेश्वरवाद) का ऐलान है जो इस्लाम का अस्ली ध्येय मक़सद है। गैश्वरवाद (Trinity) के मानने वाले ईसाई ''तौहीद एकेशवरवाद के परदे में खुदा को एक मानने का दावा करते है और आर्य धर्म के लोग भी अपने को एक ईष्वर का मानने वाला कहते हैं, मगर सच्ची तौहीद (ख़ुदा को एक मानना/एकेश्वरवाद) का पता इस्लाम के अलावा कहीं नहीं है।

जहाँ तक अल्लाह के होने का मानना है, मुशरिक (कई ईश्वर के पुजारी) कहते थे––'' हम इन मूर्तियों की पूजा इसलिए करते हैं कि ये हमको ईश्वर/अल्लाह से क़रीब कर दें।'' और धरती और आसमान का पैदा करने वाला भी वह अल्लाह को समझते थे। कुरान में है– ''अगर इनसे पूछो कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया तो ये कहेंगें, अल्लाह ने।''

मगर यहाँ तो सवाल अल्लाह के अलावा दूसरे खुदाओं के न मानने का था। इस्लाम ये कहता था कि जब पैदा करने वाला सिरजनहार वही है तो 'पूज्य' भी सिर्फ़ उसी को मानो उसी की भक्ति और पूजा करो। वह कहते थे कि नहीं, हम दूसरों को भी पूज्य मानेगें।

आप इसे यूँ कह सकते है कि ''तवल्ला'' (लगाव) यानि मानने में एख़्तेलाफ़ या मतभेद नहीं था, जो कुछ एख़्तेलाफ़ था वह ''तबर्रा'' (अलगाव) में, यानि दूसरे खुदाओं से दूरी रखने और छोड़ने में था। इस्लाम झूठे खुदाओं से अलग थलग रहने को सामने करता था और यहीं से भेद की खाई पैदा होती थी। इस्लाम के इस कलमे (धार्म सूत्र) *''लाइला–ह–इल्लल्लाह''* में इसी लिए 'इनकार' को 'मानने' से आगे रखा है। इसमें नकारने पर ज़ोर देना था, अगर ये कह दिया जाता कि *''अल्लाहु हक़्कुन''* (अल्लाह सत्य है) तो शायद सब इसको कहने पर तैयार हो जाते मगर इसमें तो अल्लाह के सिवा हर एक भगवान के नकारने का ऐलान था जिसे अरब के कबीले अपने विश्वास पर गहरी चोट समझते थे। और इसी पर आग बगूला होकर रसूल (स0) से लड़ाई ठान ली उन्होंने रसूल (स0) को लालच भी दिलाया और डराया भी, सताया भी और खून बहाने पर भी उतारू हो गए मगर रसूल (स0) की ज़बान इस सत्य कलमे से चुप नहीं हुई। वह सहन करने, जमे और अडिग रहने के साथ इसी कलमे के प्रचार में लगे रहे। दुनिया एक तरफ़ और वह खुदा के पैग़ाम का एलान करने वाला एक तरफ़, एलान करता हुआ कि,'' कहो *ला इला–हा–इल्लल्लाह* ––तुम्हारा ही भला होगा।''

दुनिया ने देखा कि विरोधों की बाढ़ उमड़ी और चली गयी, कठिनायों की आँधिया आईं और चली गयीं, मगर रसूल (स0) के सहन का पहाड़ अपनी जगह से हिला भी नहीं और आख़िर वही आवाज़ जो सिर्फ़ रसूल (स0) के होंठों से ऊंची हो रही थी और दुनिया उसे चुप करना चाहती थी, वही आवाज़ आज कितने एलान के साथ हर मिनार और मस्जिद से ऊंची होती है और दुनिया सुनती है *''अश–हदोअल्लाइला–ह इल्लाल्लाह''* ये बोल रसूल (स0) की जीत का एलान और इस्लाम की सच्चाई का निशान है और इसलिए अनिवार्य रूप से इस को अज़ान का एक हिस्सा रखा गया। दो बार तौहीद (अल्लाह को एक मानने) की गवाही देने के बाद फिर कहा जाता है *'' अश–हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह''* (''मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद स0 खुदा के पैग़म्बर दूत हैं'' यह रसूल की सदा रहने वाली याद है। खुदा ने कुरान मजीद में वादा किया है

''इसके मानी तो यह हैं कि तुम मुझे याद करो तो

में तुम्हें याद करूँगा। रसूल (स0) ने अपना जीवन ख़ुदा की याद में बिता दिया तो ख़ुदा ने भी हमेशा के लिए अपने ज़िक्र (सुमिरन) के साथ उनका ज़िक्र ज़रूरी कर दिया। फिर अज़ान में रसूल का बयान निजी (Personal) गुणों के रूप से तो नहीं है जैसे आप (स0)का अरब ख़ानदान से होना, कुरैष क़बीले (जाति) से होना, मक्की और हाशिमी होना या अब्दुल्लाह सुपुत्र अब्दुल मुत्तलिब का बेटा होना। बल्कि यह बयान तो उस पद के लिहाज़ से है जो ख़ुदा की तरफ़ से उनको दिया गया था। इसलिए वह असल में रसूल के नाम का एलान नहीं है बल्कि उस पैग़ाम की सच्चाई का एलान है जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स0 के ज़रिए से दुनिया को पहुँचा जिसका नाम 'इस्लाम' धर्म (शास्त्र) है। इसके बाद अज़ान के टुकड़े के लेहाज़ से तो नहीं मगर ईमान के हिस्से के लेहाज़ से किसी कुदरती (प्रकृति/प्रभुत्व) के इन्तेज़ाम के तहत मुसलमानों के एक बड़े वर्ग में यह चलन हो गया है कि वह *''अश्–हदु अन्ना अलीयवँ वलीउल्लाह''* (मैं गवाही देता हूं कि अली अ. अल्लाह के वली/घने दोस्त हैं) या उसके अर्थ को भी अज़ान में कहते हैं। मैं इसे कुदरत का इन्तेज़ाम इसलिए कहता हूँ कि यह शिया उलमा की कोशिशों का नतीजा है मगर उलमा का इस विषय में यह हाल है कि कोई तो अज़ान के टुकड़ों में इसका सिरे से बयान ही नहीं करता और अगर कोई बयान भी करता है तो साफ़ लिख देता है कि यह अज़ान का हिस्सा नहीं है। इसमें शिया फ़िरक़े का यह जग छाया चलन ज़रूर कुदरती इन्तेज़ाम का ही नतीजा है। बहरहाल तबरसी' की पुस्तक में एक रवायत (कथन) है कि जब भी रसूल होने की गवाही दो तो वली होने की गवाही ज़रूर दो। इससे अज़ान में भी ज़रूर ह0 अली अ0 के वली होने की गवाही का हुक्म निकलता है, इस लेहाज़ से इसको अज़ान का एक मुस्तहब (वछनीय) हिस्सा समझा जा सकता है।

अब इसके बाद वह बोल है जो हक़ीक़त में नमाज़ की ओर बुलाने वाला है और वह *''हय्या अ–लस्सलाह''* है इसका मतलब तो यह हुआ कि नमाज़ के लिए बढ़ो, मगर जो शब्द इसके लिए लाया गया है उसमें 'हयात' (ज़िन्दगी) का इशारा है। अब आप इसको इस तरह भी समझ सकते हैं यानि अपने बेजान दिल में कर्म की रूह पैदा करो, अपनी मौत को जीवन में बदल दो और ख़ुदा के सामने नमाज़ की हालत में हाज़री दो।

अब *'' हय्या अलल्फ़लाह''*, ये नामज़ का नतीजा है, इसका मतलब ये है कि इस नमाज़ में तुम्हारे लिए नजात/मोक्ष है। आओ इस की तरफ़ जो ख़ुद तुम्हारी भलाई और नजात का ज़रिया है।

'' हय्या अला ख़ैरिल अ़मल'' ये इस कर्म (नमाज़) की ऊंचाई और बड़ाई की बात है यानि इसे कोई छोटी चीज़ न समझो, ये बहुत अच्छा काम है।

सारी इस्लामी किताबों से ये बात साबित है कि ये टुकड़ा (हय्या अ़ला ख़ैरिल अ़मल) रसूल (स0) के समय अज़ान में शामिल था और कहा जाता था। बाद में राजनीति की वजह से इसको निकाल दिया गया और ये उस वक़्त हुआ जब मुसल्मानों को जेहाद उकसाया जा रहा था, तो ये ख़्याल किया गया कि ये लोग अगर सबसे अच्छे काम नमाज़ को समझ लेंगे तो जेहाद की तरफ़ जी कम लगेगा, इसलिए इस टुकड़े को अज़ान से हटा दिया गया। मगर हम तो रसूल (स0) की शिक्षा और अ़मल के बाध्य (बन्धे)हैं और इसीलिए इस *(हय्या अला ख़ैरिल अ़मल)* को अज़ान के टुकड़े में ज़रूरी समझते है।

इसके बाद फिर आख़िर में दो बार *''अल्लाहो अकबर''* है जिससे ख़ुदा की बड़ाई का दोबारा एहसास पैदा कराया जाता है। और अज़ान के एकदम आख़िर में दो बार *''ला इला–ह इल्लल्लाह''* इससे ये ख़ास फ़ायदा मिला है कि अज़ान शुरू भी अल्लाह के नाम से हुई और ख़त्म भी अल्लाह के नाम पर हो गयी।

अगर *'अल्लाहु अकबर'* आख़िरी टुकड़ा होता तो आख़िर में अल्लाह के नाम के बजाए उसका एक गुण यानि 'अकबर' आता लेकिन *'ला–इला–हइल्लल्लाह'* पर अज़ान के ख़त्म होने से 'अल्लाह' से आरम्भ और 'अल्लाह' ही पर समापन हुई, और यहाँ ये बता दिया कि – वही पहला है और वही अन्तिम है, उसी से शुरू हुई और उसी की तरफ़ पलटना है।

, dker

एक़ामत में भी लगभग यही टुकड़े हैं, केवल यहां *''अल्लाहु अकबर''* शुरू में दो बार और आख़िर में *''ला–इला–हइल्लल्लाह ''*एक बार है। चूँकि अज़ान दूर वालों को नमाज़ का ऐलान करके पास बुलाने के लिए है इसलिए अज़ान में नमाज़ से ताल्लुक़ रखने वाला सिर्फ़ ये एक बोल है– *''हय्या अलस्सलाह''* यानि

नमाज़ के लिए बढ़ो। अब बढ़ने की हदें अलग–अलग हैं, कोई दूर रहता है और कोई पास इसलिए अज़ान में ठहर–ठहर कर कहना और तरतील के साथ यानि बढ़ा–बढ़ा कर और खींच कर शब्दों का बोलना बेहतर है, और इसमें शब्दों का ऊँची आवाज़ से निकालना ज़्यादा अच्छा है। मगर 'एक़ामत' तो नमाज़ का सबसे पास का पैग़ाम है जो उन लोगों के लिए है जो पास में मौजूद हैं उन सबको बिना किसी भेद के नमाज़ के लिए खड़े होने का न्योता देती है इसलिए एक़ामत में एक जुम्ले को बढ़ा दिया गया यानि *"है–य अलस्सलाह", "हय्या अलल्फ़लाह," "हय्या अ़ला ख़ैरिल अ़मल"* दो–दो बार कहने के बाद दो बार *"क़द्–क़ा–मतिस्सलाह"* यानि बस अब कोई इन्तेज़ार नहीं अब नमाज़ खड़ी हो गई है, इसलिए अच्छा है कि इसके कहते ही सफ़ (नमाज़ के लिए लाइन में खड़े होना) बांध कर खड़े हो जाइए और अब देर न कीजीए इसके बाद अस्ल नमाज़ शुरू हो जाती है, और बस।

uekt+dh 'krZ

नमाज़ के लिए कुछ टुकड़े हैं और कुछ शर्ते हैं

पहली शर्त पाकीज़गी होना है जिसका बयान इसके पहले हो चुका है। दूसरी शर्त 'वक़्त' की है, पांचों वक़्त की नमाज़ के लिए अलग–अलग ख़ास वक़्त निश्चित कर दिया गया है। उस ख़ास वक़्त से पहले वह नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती और वक़्त चले जाने के बाद उस नमाज़ के अदा (समय पर पढ़ना) करने का मौक़ा नहीं रहता। हाँ 'कज़ा' (छुटी नमाज़ का बाद में पढ़ना) तो एक नया फर्ज़ कर्तव्य लागू हो जाता है जिसके पढ़ने का कोई वक़्त निश्चित नहीं होता। इसका अस्ल नमाज़ के हुक्म से जो (निश्चित) वक़्त से जुड़ा था, कोई लगाव नहीं है।

वैसे तो हर नमाज़ को अदा करने के लिए धर्मशास्त्र की तरफ़ से बहुत ज़्यादा वक़्त दिया गया है, जैसे सुबह की नमाज़ के लिए सुबह साादिक़ से लेकर सूर्योदय सूरज के ढलने (सूरज के निकलने) तक।

ज़ुहर व अस्र के लिए सूर्योदय (सूरज के ढ़लने से लेकर) से लेकर सूरज डूबने से पहले तक, मग़रिब व इशा के लिए सूरज डूबने के बाद से आधी रात तक। मगर इस बात पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया गया है कि हर नमाज़ को वक़्त आने के साथ ही पढ़ लें। इसमें बेवजह देर करने की बड़ी निन्दा या बुराई की गई है और क़ुर्आने मजीद में जहाँ–जहाँ ' नमाज़ की रक्षा करो' की तरह के शब्द हैं, वहाँ रक्षा के मानी यही लिए गए हैं कि नमाज़ों में शुरू शुरू वक़्त का ख़्याल रखा जाए।

एक हदीस में जो रसूल (स0) से दुहराई है, उसमें है कि "जो नमाज़ को उसके निश्चित वक़्त के ख़िलाफ (अन्त समय) पढ़ता है, तो वह नमाज़ इस तरह ऊंची होती है कि स्याह काली और अंधेरी, होती है और वह कहती है कि तूने मुझे बरबाद कर दिया। "हद ये है कि जनाबे रसूल (स0) फ़रमाते है कि– "मेरी शफ़ाअ़त (सिफारिश) का हक़दार वह नहीं है जो नमाज़ में उसका वक़्त आने के बाद देर करे।"

इमामे जाफ़र सादिक़ (अ0) की रवायत (कहना) है कि रसूल (स0) ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी वक़्त जब मौन से पहले की बीमारी में थे, बेहोश थे, फिर कुछ बेहोशी टूटी, तो ये शब्द कहे (जो ऊपर बयान किए गए हैं)

दुःख की बात है और सबक़ लेने की बात का वक़्त है कि आज सबसे ज़्यादा ये कमज़ोरी शियों में पैदा हो गई है। हमारी ख़ासियत ही ये हो गई है कि हम नमाज़ के पहले वक़्त की अच्छाई और महत्व की कोई परवाह नहीं करते, जबकि इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) फ़रमाते हैं–"

हमारे शियों का तीन बातों से इम्तेहान लो–

नमाज़ के (पहले) वक़्त की रक्षा कैसे करते हैं, और अपने 'राज़ों (Secrets) रहस्यों की हिफ़ाज़त दुश्मनों से किस हद तक करते हैं और अपने भाइयों (धर्म से) के साथ किस हद तक हमदर्दी व सौहार्द रखते हैं। दुःख है कि आज ये गुण दूसरों में मिलते हैं और हमारे अपने इनसे ख़ाली हैं।

इसी तरह एक रवायत में पहली वाली बात यानि नमाज़ के पहले वक़्त की पाबन्दी (समय आते ही पहले पढ़ते रहना, और इसे बराबर करते रहना) का बयान है–

मालूम होता है कि जो चीज़ें ऊपर बयान की गई हैं वह उस ज़माने में शियों की ख़ास पहचान थीं

¼dfd;+k i`s uk 16————½

इस्लाम धर्म शास्त्र

ys[kd %जनाब सैय्यद लियाक़त हुसैन हिन्दी बनारसी
vuqokn %जनाब सैय्यद जाफ़र असर नक़वी साहब जायसी

fdLr %4

फ़ुरू–ए–दीन

vFkkZr~ /kekZdh'kk[kk,a7 gSa

(1) नमाज़ (प्रार्थना)। (2) रोज़ा (व्रत)।
(3) हज (तीर्थ यात्रा)। (4) ज़कात (दान)।
(5) खुम्स। (6) जिहाद (धार्मिक युद्ध)
(7) अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर (अच्छे कार्यों का आदेश देना तथा बुरे कार्यों से रोकना)।

uekt+dko.kZu

uekt+dkl e; %प्रति दिन 5 समय की नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है। (1) प्रातः काल की नमाज़ 2 रकात (इसका समय प्रातः काल से सूर्योदय के पूर्व तक रहता है।) (2) ज़ुहर (मध्यकालीन) की नमाज़ चार रकात (इसका समय 1 बजे से लेकर 3 बजे तक रहता है।) (3) अस्र की नमाज़ 4 रकात (इसका समय 3 बजे के बाद से सूर्योदय तक रहता है।) (4) मग़रिब की नमाज़ 3 रकात (इसका समय सूर्यास्त से लेकर इशा की नमाज़ तक का प्रारम्भ होने तक रहता है।) (5) इशा (रात्रि कालीन) की नमाज़ 4 रकात (इसका समय मग़रिब की नमाज़ के तुरन्त बाद ही से आरम्भ हो जाता है)।

(नोटः—मग़रिब तथा इशा की नमाज़ के मध्य में केवल एक तस्बीह का अन्तर बताया गया है। अस्र की नमाज़ का समय तब आरम्भ होता है जब अपना प्रतिबिम्ब अपने से दूना हो जाए। संशोधक)

okftc uekt+ ¼vfuok;Z uekt+½ % (1) प्रति दिन की पांचों समय की नमाज़। (2) नमाज़ जुमा। (3) ईद की नमाज़। (4) ईद–ए–कुर्बा (बक़रईद की नमाज़)। (5) नमाज़ तवाफ़–ए–काबा (काबे के चहु ओर घूमने की नमाज़) । (6) नमाज़–ए–आयात, (सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण, काली आंधी तथा भूकम्प के समय की नमाज़)। (7) नमाज़–ए–मय्यत (मृतक के शव पर पढ़ी जाने वाली नमाज़)। (8) नमाज़ क़ज़ा (नमाज़ छोड़ देने की—उनकी पूर्ति के लिए)। (9) नमाज़ (क़सम) शपथ ग्रहण करने से। (10) नमाज़ प्रतिज्ञा करने से। (11) नमाज़ इजारा (पैसा लेकर किसी की क़ज़ा नमाज़ पढ़ना)। (12) पिताकी मृत्यु के पश्चात् पिता के द्वारा क़ज़ा की हुई नमाज़ जिसका पढ़ना सबसे बड़े पुत्र पर अनिवार्य है।

l qUurh uekt+ ¼iq.; nk;d½

uekt+ @oktNuh; ½ % (1) प्रत्येक दिन की सुन्नती नमाज़। (2) वह नमाज़ जो हज़रत मुहम्मद साहब से सम्बन्धित है। (3) हज़रत अली अ0 से सम्बन्धित नमाज़। (4) हज़रत फ़ातिमा से सम्बन्धित नमाज़। (5) नमाज़ जाफ़र–ए–तय्यार अ0 (6) नमाज़ आराबी (7) वर्षा के हेतु नमाज़ (8) नमाज़ ईद–ए–ग़दीर (9) नमाज़ प्रथम दिवस प्रत्येक मास (10) रमज़ान की नाफ़िला पुण्य दायक (11) नमाज़ रोज़े मबअस (12) नमाज़ मबअस को रात की (जिस दिन रसूल ने अपनी रिसालत की घोषण की) (13) नमाज़ रोज़–ए–मुबाहिला (ईसाइयों से शपथ ग्रहण /वाद विवाद का दिन) (14) नमाज़ ज़ियारत (15) नमाज़ रग़ायब (16) 15 रजब की रात्रि की नमाज़ (17) रमज़ान की ईद की रात्रि की नमाज़ (18) नमाज़े ग़फ़ैला (19) नमाज़ हदिय–ए–मय्यत (मृतक के लिए) (20) यात्रा आरम्भ करने के पूर्व की नमाज़ (21) नमाज़ तौबा (22) नमाज़े आशूरा (23) नमाज़ नौरोज़।

uekt+ vkjEHkdjusdsiwoZdkdk;Z

(1) हृदय से स्वच्छ (पवित्र) होना (2) गन्दगी दूर करना (3) अपना आगा–पीछा वस्त्र से छुपाना (4) नमाज़ पढ़ने का स्थान अपवित्र न हो तथा किसी से छीना हुआ न हो (5) नमाज़ का समय देखना (6) किबला (काबा) की दिशा ज्ञात करना।

uekt +dk oL=

(1) वस्त्र चोरी का या किसी से छीना हुआ न हो (2) रेशमी न हों (यह स्त्रियों पर लागू नहीं होता) (3) शरीर में सोने की अंगूठी अथवा अन्य कोई वस्तु न हो (4) वस्त्र पवित्र हों (5) ऐसे पशु की खाल न हो जिसका मास खाना निषेध है।

uekt +dk LFkku

(1) नमाज़ पढने का स्थान छीना हुआ न हो अथवा स्थान के स्वामी की आज्ञा लेना अनिवार्य है। (2) अपवित्र न हो। नमाज़ पढ़ने के पूर्व हर प्रकार की अपवित्रता से शरीर तथा वस्त्र का पवित्र होना एंव नमाज़ आरम्भ करने के पूर्व वुज़ू अथवा तयम्मुम कर लेना आवश्यक है।

otw+ djus dh fof/k

सर्व प्रथम पवित्र जल से दोनों हाथों को गट्टे तक दो बार धोए, फिर तीन बार कुल्ली करे फिर तीन बार नाक में पानी डाले फिर वुज़ू की नीयत इस प्रकार करे कि ''वुज़ू करता हूं मैं वास्ते दूर होने हदस के और मुबाह होने नमाज़ के वाजिब कुरबतन इलल्लाह'' अतः साथ ही नियत के एक चुल्लू पानी दाहिने हाथ पर से मुख पर डाले इस प्रकार कि मस्तक के आरम्भ होने से ठूड्डी के नीचे तक और चौड़ाई में दोनों कान की जड़ के निकट तक धोयें। इसके पश्चात दाहिने हाथ की कोंहनी के कुछ ऊपर से उंगलियों के सिरे तक धोंये इसके उपरान्त सिर का मसह करे अर्थात् हाथ की (गीली) उंगलियां तालू से बालों के अन्तिम सिरे तक आगे की ओर खींचे इसके पश्चात दाहिने पांव का दाहिने हाथ से तथा बाएं पांव का बायें हाथ से दोनों पांव की उंगलियों से गट्टे तक मसह करे।

okftc otw+

(1) नमाज़ पढ़ने के हेतु (2) खाना–ए–काबा का तवाफ़ करते समय (3) शरीर के किसी भाग को कुर्आन से छुलाने के पूर्व वुज़ू करना अनिवार्य है।

lqUurh otw+

(1) कुर्आन पढ़ने के पूर्व, (2) कुर्आन उठाने, (3) मस्जिद में प्रवेश करने, (4) नमाज़–ए–मय्यत पढ़ने, (5) आवश्यकता की सफलता के लिए, (6) ज़ियारत क़ब्रे–ए–मोमिन, (7) सोते में स्वप्नदोष होने पर, (8) नकसीर फटने पर (9) वमन (क़ै) होने पर (10) दांत से रक्त निकलने पर वज़ू करना (11) सर्वदा वज़ू के साथ रहना पुण्यदायक है।

otw+ Hkax djus okyh oLrq,a

(1) मूत्र आना। (2) शौचालय जाना। (3) मूत्र के स्थान से लेसदार द्रव्य (वीर्या) निकलना। (4) हवा (रियाह) का खुलना। (5) निद्रा में सो जाना। (6) मूर्छा एंव मस्ती का होना। (7) शव को छूना। (8) स्वप्नदोष हो जाना। (9) स्त्रियों के मासिक धर्म का आना एंव बच्चा जनने के समय रक्त के प्रवाहित होने से वुज़ू भंग हो जाता है अर्थात् पुनः वुज़ू करना अनिवार्य है

xqly ¼Luku½ dk o.kZu

xqly okftc ch%& (अनिवार्य स्नान) (1) जनाबत, स्वप्न दोष होने अथवा सम्भोग करने पर। (2) शव का स्नान। (3) शव स्पर्श करने का स्नान (ये तीन स्नान पुरूष तथा स्त्री दोनों से सम्बन्धित हैं) (4) स्त्री के मासिक धर्म का स्नान। (5) बच्चा जनने के पश्चात् का स्नान (6 इस्तेहाजा का स्नान (अन्तिम तीन स्नान स्त्रियों से सम्बन्धित हैं।

गुस्ल सुन्नती(पुन्य दायक स्नान):–(1) जुमा के दिन का स्नान, रमज़ान मास की फुट रात्रि का स्नान (21, 23, 25, 27, 29) (3) ईद की रात्रि का स्नान (4) बक़ीद की रात्रि का स्नान (5) ईद तथा बकरीद के दिन का स्नान (6) 15 रजब (7) 15 शाबान (8) 27 रजब (रोज मबअस) (9) रसूल का जन्म दिवस : 17 रबीउल अव्वल (10) मुबाहिले के दिन, 24 बक़रीद (11) जिस दिन सर्व प्रथम पृथ्वी बिछाई गई अर्थात् (25 ज़ीकादा), (12) ईद–ए–ग़दीर (18 बक़रीद) (13) अरफ़ा दिवस (9 बक़रीद) (14) तरविया के दिन 8 बक़रीद (17) नौरोज़ (21 मार्च) (18) एहराम बांधने के समय (हज तथा उमरा) (17) तवाफ–ए–खान–ए–काबा (18) चौदह मासूमों की क़ब्र की ज़ियारत के समय (19) तौबा करने के समय (20) मक्का के हरम में प्रवेश करने के समय (21) मक्का में प्रवेश करने के समय (22) मस्जिदुल हराम में प्रवेश करने के समय (23) खाना–ए–काबा में प्रवेश करने के समय (24) आवश्यकता की पूर्ति के समय (25) इस्तिखारा करते समय (26) बच्चा पैदा होने पर (27) वर्षा होने के हेतु (28) सूर्य तथा चन्द्रग्रहण की अनिवार्य नमाज़ पढ़ने के समय (29) यदि किसी व्यक्ति का गला घूंटा गया हो और उसे देख कर लौटे तों गुस्ल करे (30) छिपकली मरने के पश्चात (31) पागल होने के पश्चात यदि होश

आए तो गुस्ल करे (32) शव को कफ़न पहनाने और दफ़न करके लौटने के पश्चात इत्यादि।

xbly tukcr

यह दो प्रकार का होता है। एक तो स्वप्नदोष में वीर्य पात होने पर। दूसरे स्त्री के साथ सहवास करने के पश्चात, वीर्य पतन हुआ हो अथवा नहीं ऐसी दशा में गुस्ल करना अनिवार्य है। इस स्नान को गुस्ले जनाबत कहते हैं इस स्नान के पश्चात नमाज़ के लिए वजू इत्यादि की आवश्यकता नहीं है। इस स्नान के दो नियम हैं। (1) तरतीबी (2) इरतमासी।

¼1½/xbly tukcr rjrhch%& सर्व प्रथम शरीर को स्वच्छ करके पवित्र करे तत्पश्चात नीयत करे कि ''गुस्ल जनाबत करता हूं वास्ते दूर होने हदस के और मुबाह होने नमाज़ के वाजिब कुर्बतन इलल्लाह'' और नीयत के साथ ही सिर तथा गर्दन को धोये इसके पश्चात दाहिनी ओर गर्दन से पांव की उंगलियों तक (आधा शरीर) इस प्रकार धोये कि समस्त नाक कान तथा बाल की जड़ तक पानी पंहुच जाये इसी प्रकार दूसरी ओर भी धोये यदि हाथ में अंगूठी छल्ला इत्यादि हो तो उसको भी उतार देना चाहिए। यदि नदी तालाब या हौज़ में गुस्ल तरतीबी करना चाहे तो शरीर को गन्दगी से पवित्र करके नियत करे फिर सिर तथा गर्दन को डुबाने के लिए डुबकी लगाये। फिर दूसरी बार शरीर के दाहिने भाग के विचार से डुबकी लगाये। फिर तीसरी बार शरीर के बाएं अंग के विचार से डुबकी लगाए।

¼2½/xbly tukcr bfrekl h%& सर्व प्रथम शरीर को पवित्र करे तत्पश्चात नीयत करे कि ''गुस्ल जनाबत इरतमासी करता हूं वास्ते दूर होने हदस के व मुबाह होने नमाज़ के वाजिब कुर्बतन इलल्लाह ''हर प्रकार के स्नान की यही विधि है के वहां मय्यत (शव) के स्नान की विधि (प्रथक है। नीयत के साथ सम्पूर्ण शरीर को पानी में ग़ोता दे।

fL=;ksa ds Luku ¼xqly½

स्त्रियों के लिए गुस्ल जनाबत के अतिरिक्त और तीन प्रकार के गुस्ल अनिवार्य हैं। परन्तु इन स्नानों के साथ नमाज़ इत्यादि के लिए वुज़ू आवश्यक है।

¼1½/xbysgSt (मासिक धर्म का स्नान) स्त्रियों के युवावस्था पर पंहुचने के समय प्रत्येक मास खरी ईंट की समान लाल रक्त वेग के साथ उछल कर तीन दिन से कम तथा दस दिन से अधिक नहीं आता इसको खूने हैज़ (मासिक धर्म) कहते हैं। इस के बन्द होने पर गुस्ल अनिवार्य है। नीयत इस प्रकार करे कि गुस्ल हैज़ करती हूं वास्ते दूर होने हदस के और मुबाह होने नमाज़ के वाजिब कुर्बतन इलल्लाह'' फिर सिर तथा गर्दन पानी से धोये उसके पश्चात शरीर का दायाँ भाग गर्दन से पैर की उंगलियों तक धोये फिर इस प्रकार बायाँ भाग धोये यदि नदी, तालाब अथवा हौज़ में डुबकी लगाना होतो प्रथम सिर तथा गर्दन के विचार से फिर शरीर के दायें भाग फिर बायें भाग के विचार से पानी में डुबकी लगाए।

¼2½/xbysfuQkl (प्रसव रक्त का स्नान) बच्चा उत्पन्न होने (प्रसूति) के पश्चात एक अथवा दो अधिकतम 10 दिन तक रक्त प्रवाहित होता रहता है वह निकास है जब बन्द हो जाए तो तुरन्त स्नान अनिवार्य है इसके पश्चात नमाज़ तथा रोज़े का कार्य करना चाहिए ऐसी अवस्था में छटी चिल्ला का सम्पन्न करने का ध्यान रखना तथा स्त्री को अपवित्र समझना असत्य है। हैज़ तथा निफ़ास के समय तक नमाज़ की क्षमा है। परन्तु पवित्र होने के पश्चात रोज़ा तथा नमाज़ की 'क़ज़ा' (छूटा हुआ पूरा करना) आवश्यक है।

¼3½/xbysbLrgkt k%& जो रक्त हैज़ तथा निफ़ास के अतिरिक्त रोग के रूप में अधिकांश पीला पन लिए हुए, ठण्डा, पतला अनिश्चित समय तक प्रवाहित हुआ करे उसको इस्तेहज़ा कहते हैं इसकी तीन दशाएं हैं:–

(1) क़लीला (थोड़ा)

(2) मुतवस्सिता (माध्यमिक)

(3) क़सीरा (अधिक)

¼1½/dyhyk%& जब रक्त से सम्पूर्ण रूई न भरे तो नमाज़ के पांचों समय रूई बदलना, शरीर को पवित्र करना और वज़ू करना आवश्यक है।

¼2½/eqroflLrk%& जब रक्त से पूरी रूई भर जाए तो नमाज़ के पांचों समय रूई बदलना, शरीर को पवित्र करना, वज़ू करना प्रातः काल की नमाज़ के समय स्नान करना अनिवार्य है। और यदि रोज़ा रखना है तो इसी स्नान को प्रातः काल से पूर्व करना चाहिए।

¼3½/dlhjk%& जब रक्त इतना अधिक प्रवाहित हो कि रूई से फूट कर बाहर निकल आवे तो पांचों समय

के वजू के अतिरिक्त रूई बदलना, शरीर को पवित्र करना और प्रातः काल, जुहर (दोपहर) अस्र तथा मग़रिब (सांयकल तथा रात्रि) की नमाज़ के लिए स्नान करना अनिवार्य है। इस्तेहाज़ा की दशा में नमाज़ रोज़ा नहीं छोड़ना चाहिए, यदि स्नान करने से पानी हानि पंहुचाता हो तो तयम्मुम कर लिया करें।

xqlys e;;r%&(शव का स्नान) मृतक के शव को इस प्रकार चित लिटाए कि उसके पैर काबे की और हों और अपवित्रता को दूर कर के समस्त शरीर को उस तख़ते के साथ जिस पर गुस्ल देते हैं पवित्र कर के और थोड़ी सी बेर की पत्तियां हाथ से मलकर पानीं में उसका रस डालें और यह नियत करें कि मैं इस शव को आबे सदर का गुस्ल देता हूं रज़ाये खुदा के लिए और फिर शव के सिर तथा गर्दन को धोयें और शरीर के समस्त भाग पर पानी पंहुचाये तदोपरान्त दायीं ओर आधा शरीर गर्दन से पांव की उंगली तथा नख तक धोये और समस्त भागों तक पानी पंहुचाए इसी प्रकार बायी ओर आधा शरीर धोये तत्पश्चात थोड़ा सा कपूर ले और हाथों में मलकर पानी में मिलाए और यह नीयत करे कि ''इस मय्यत को आबे काफ़ूर का गुस्ल देता हूं रज़ाये खुदा के लिए'' और सिर तथा गर्दन काफ़ूर के जल से धोये तदोपरान्त उसके दहनी और गर्दन से पावों की नख तक आधा शरीर धोयें इसी प्रकार बायीं ओर का आधा शरीर धोये फिर इसके पश्चात केवल शुद्ध जल से गुस्ल दे और यह नीयत करे कि ''मैं इस मय्यत को आबे खालिस का गुस्ल देतो हूं खुश्नूदि–ए–खुदा के लिए'' और शुद्ध जल से शव के सिर तथा गर्दन को धोकर दायीं और बायीं ओर का शरीर धोयें। पुरूष को पुरूष तथा स्त्री को स्त्री गुस्ले दें।

gqur%&स्नान के पश्चात शव को 'हुनूत' करना अनिवार्य है अर्थात मस्तक, दोनों हाथों की हथेली, दोनों घुटनों तथा दोनों पांव के नखों पर कपूर मले।

dQu%&हुनूत के पश्चात शव को कफ़न दे। (1) एक कफ़नी (2) एक लुंगी (3) एक बडी़ चादर यदि दो चादरें हों तो उत्तम है (4) पुरूष को अमामा (पगड़ी) एंव रान पेंच, स्त्री को मक़ना व सीना बन्द होतो उत्तम है।

xqly el & &e;r ¼o Li'kZ djuk½%&प्राण निकलने के पश्चात और शव को स्नान देने के पूर्व यदि शव का कोई भाग किसी व्यक्ति से स्पर्श हो जाये तो गुस्ल मस–ए–मय्यत अनिवार्य है।

uekt se;r ¼o dhuekt ½%&कफ़न देने के पश्चात नमाज़े मय्यत पढ़ना प्रत्येक व्यक्ति पर अनिवार्य है।

nQu& &e;r (शव का गाड़ना)**%&**(1) शव को क़ब्रे के भीतर दायीं ओर काबे की ओर मुख करके लिटाए (2) कब्र को इस प्रकार बन्द करे कि मृतक का शरीर मांसाहारी पशुओं से सुरक्षित रहे और उसकी दुर्गन्ध बाहर न आए (3) यदि जल यात्रा में समुद्र में मरे और पृथ्वी तक पंहुचना सम्भव न हो तो किसी बड़े घड़े या सन्दूक में मुख बन्द करके कोई भारी वस्तु शव से बान्ध कर लहद में लिटाने की भांति समुद्र में छोड़ देवे। क़ब्र को बन्द करने के पूर्व 'तलक़ीन' (प्रश्नोत्तर मुनकिर नकीर के लिए उपदेश) पढ़ना चाहिए।

r;Eeq dk o.kZu

यदि जल हानिकारक हो या अप्राप्य हो या वह जल ग़सबी (किसी का छीना हुआ) हो और नमाज़ का समय तंग हो तो 'गुस्ल' अथवा 'वजू' के स्थान पर तयम्मुम करना चाहिए।

r;Eeq dh fof/k%&प्रथम नियत करे कि ''तयम्मुम करता हूं बदले गुस्ल अथवा वुजू के वास्ते मुबाह होने नमाज़ के, वाजिब कुरबतन इलल्लाह' इसके पश्चात तुरन्त दोनों हाथों को एक बार मिट्टी पर मारे, उसके पश्चात हाथों को मिलाकर माथे के ऊपर से नाक तक खींचे, इसके पश्चात बाये हाथ की हथेली से दाहिने हाथ की पीठ पर गट्टे से उंगलियों के सिरे तक 'मसह' (स्पर्श) करे। तदोपरान्त इसी प्रकार बायें हाथ की पीठ पर दाहिने हाथ की हथेली से गट्टे से उंगलियों के सिरे तक 'मसह' करे। मिट्टी पर दो बार हाथ मारना उत्तम है प्रथम बार माथे के हेतु दूसरी बार हाथों के लिए।

utkLr ¼vi fo=oLrq,a½

(1) मूत्र (2) मल (मनुष्य का हो अथवा हराम पशुओं का) (3) रक्त (मनुष्य का अथवा उछल कर रक्त प्रवाह होने वाले पशुओं का) (4)वीर्य (मनुष्य का हो अथवा पशु का) (5) कुत्ता (6) सुवर (7) काफ़िर (जो इस्लाम धर्म का अनुयायी न हो) (8) मदिरा (वे मादक वस्तुऐं जो तरल हों और बहने वाली हों) (9) अंगूर का शीरा (जिसमें उबाल आजाए) (10) जौ की

मदिरा (11) मुदी (वीर्य पात होने के पूर्व जो एक प्रकार का तरल पदार्थ निकलता है—मनुष्य का हो अथवा उन पशुओं का जिन का रक्त ज़बह करते समय गर्दन की नाड़ी से उछल कर निकलता हो) (12) पसीना (वह पसीना जो (निषिद्ध/हराम) वीर्य पात के पश्चात निकले और उस समय तक अनिवार्य गुस्ल न किया गया हो।

i fo= djusokyh oLrq,a

(1) जल (2) पृथ्वी (3) सूर्य (4) अग्नि (5) इस्तेहाला+ (6) इन्तिक़ाल (7) इनक़िलाब (8) नक्स (9) इस्लाम (10) ज़वाल—ए—ऐन (11) मसह व ताहिर (12) तबईयत

uekt +dh fof/k

वुज़ू करने के पश्चात जब नमाज़ पढ़ने का विचार करे तो प्रथम काबा की ओर मुख करके खड़ा हो जाए और निम्नलिखित ढंग से अज़ान तथा अक़ामत कहे।

vt ku%& (1) चार बार उच्च स्वर से कहे 'अल्लाहु अक्बर' (अल्लाह सबसे बड़ा है) (2) फिर दो बार कहे 'अश्हदो अल् ला इला—ह इल्लल्लाह' (मैं साक्षी हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य अल्लाह नहीं है) (3) फिर दो बार कहे 'अशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह' (साक्षी हूं कि निस्सन्देह मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं) (4) फिर दो बार कहे 'अशहदो अन्ना अमीरल मोमिनी—न व इमामल मुत्तक़ी—न अलीयँव वली युल्लाहि व वसीयु रसूलूल्लाहे व ख़लीफ़तुहु बिला फस्ल'। (साक्षी हूं कि निस्सन्देह अली अ0 मोमिनों के अमीर और मुत्तक़ियों के इमाम, अल्लाह के वली, मुहम्मद के वसी तथा ख़लीफा बिला फस्ल हैं) (5) फिर दो बार कहे ''हय्या अलस्सलात'' (नमाज़ के लिए तत्पर हो जाओ) (6) फिर दो बार कहे 'हय्या अललफलाह' (भलाई करने पर तत्पर हो जाओ) (7) फिर दो बार कहे 'हय्या अला ख़ैरिल अमल' (अत्याधिक सुन्दर कार्य करने को तत्पर हो जाओ) (8) फिर दो बार कहे 'अल्लाहु अक्बर' (अल्लाह सबसे बड़ा है) (9) फिर दो बार कहे 'ला इला—ह इल्लल्लाह' (अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा खुदा नहीं है।)

फिर बैठ जाए और यह दुआ पढ़े (प्रार्थना)

vt ku ds i 'pkr dh nqvk%&

''अल्ला हुम्मज अल क़लबी बारौं व ऐशी क़ारौं व अमली सारौं व रिज़्की दारौं व औलादी अबरारौं वज अल्ली इन्न्—द क़ब्रि नबीयि—क मुहम्मदिन सवल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मुस्तक़र्रवं व क़रारवं बे रहमति—क या अरहमर्राहिमीन।''

vuqokn%& हे ईश्वर ! मेरे हृदय को भला और मेरे सुख को सदैव रख और कार्य (कर्म) होता रहे, और मेरी जीविका सदैव दे और मेरे वालों को भलाई दे, और मेरे लिए अपने नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा के समीप क़ब्र प्रदान कर, और उन पर अल्लाह की रहमत और दरूद हो और उनकी औलाद पर सलाम सदैव स्थिरता, तथा कृपा के साथ प्रदान कर, ए अधिक दयानिधन।

इस दुआ को पढ़ने के पश्चात इस प्रकार इक़ामत कहेः—

bdker %& (1) ''अल्लाहु अकबर'' दो बार इसके पश्चात सभी अरकान (कार्य) अज़ान की भांति करे ''हय्या अला ख़ैरिल अमल'' के बाद दो बार 'क़द क़ा—मतिस्सलात' को अधिक करे और 'ला इला—ह इल्लल्लाह' को एक बार कहे इसके पश्चात नमाज़ आरम्भ करे।

uekt %& इक़ामत के पश्चात काबा की ओर मुख कर के सीधा खड़ा हो और इस प्रकार नीयत करे ''नमाज़ पढ़ता हूं मैं (जैसे) सुबह की दो रिकात वाजिब क़ुर्बतन इलल्लाह'' इसके पश्चात ही तकबीर अर्थात 'अल्लाहो अकबर' उच्च स्वर से कहे और दोनों हाथों को कानों तक ले जाए और फिर हाथों को नीचे गिराले और 'हम्द' का सूरा इस प्रकार पढ़ेः—

'बिस्मिल्लाहिर रहमानिर् रहीम'

''अल्—हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, अर् रहमानिर् रहीम, मालिकि यौमिद्दीन, इय्या—क नाबुदू व—इय्याका नस्—तईन, इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम, सिरातल लज़ीन अन अम—त अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़ाल्लीन।''

vuqokn%& आरम्भ करता हूं खुदा के नाम से जो समस्त सृष्टि पर दया करने वाला है। हर प्रकार की वन्दना अल्लाह के लिए है जो कुल संसार का पालने वाला है, प्रलय के दिन का स्वामी है, हम तेरी इबादत करते हैं और तुझी से सहायता चाहते हैं, और हमको सीधे मार्ग पर चला उनके मार्ग पर जिन पर तेरी नेमत (अच्छाई) उतरी, न कि उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने अपना अज़ाब (प्रकोप/दुख) उतारा और न उनका

मार्ग जो पथभ्रष्ट हो गये हैं।
'अलहम्द' के पश्चात जो सूरा चाहे पढ़े अधिकार है।
'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'
'इन्ना अनज़लना–हु फ़ी लै–लतिल् क़द्र व माअदरा–क फ़ी लैलतुल क़द्र। लै–लतुल् क़द्रि ख़ैरूम मिन अलफ़ि शहरिन, तनज़्ज़लुल मलाइ–क–तु वर रूहु फीहा बि ज़्नि रब्बिहिम मिन कुल्लि अमरिन सलामुन हिया–हत्ता मत–लइल फ़ज्र।'

vuqokn%&(बिस्मिल्लाह का अर्थ ऊपर लिखा जा चुका है) निस्सन्देह हमने कुर्आन को क़द्र की रात में उतारा और तू नहीं जानता की क़द्र की रात कैसी रात है, क़द्र की रात्रि उत्तम है हज़ार महीनों से, अपने पालने वाले के आदेश से इस रात्रि को मलायका (ईश्वर दूत) और रूह उतरते हैं। यह रात इबादत करने वालों के लिए हर कार्य में सुरक्षा का कारण है यहां तक कि प्रातः काल हो जाये।

फिर 'अल्लाहु अकबर' कह कर रूकूअ में जाय (घुटनों पर हथेली रखकर झुके) और उसी दशा में 3 बार 'सुब्हा–न रब्बि–यल अज़ीमि व बिहम्–दिह' कहे। (प्रत्येक बुराई से अपने पालने वाले को पवित्र जानता हूं जो उच्च पद रखता है, उसी की वन्दना करता हूं) फिर सीधा खड़ा हो और 'समि अल्ला–हु–लिमन हमिदह कहे (खुदा ने उस व्यक्ति की वन्दना को सुना जिसने वन्दना की) और फिर सीधा खड़ा होकर 'अल्लाहु अकबर' दोनों हाथों को कानों तक उठा कर कहे फिर हाथ गिरा कर सजदे में इस प्रकार जाए कि दोनों हाथों की हथेलियां धरती पर हों और मस्तक सजदगाह के ऊपर रखे और घुटनों को पैर से मिलाकर रखे और उसी दशा में तीन बार कहे 'सुब्हा–न रब्बि–यल आला व बिहमदिह (पवित्र जानता हूं मैं अपने पालने वाले को जो सर्वोच्च है, उसी की वन्दना में लीन हूं) तत्पश्चात सजदे से सिर उठाए ओर 'अल्लाहु अकबर' कह कर दोनों पैरों पर दो ज़ानू होकर जांघों को मिलाकर बैठे और दोनों हाथो को देनों जघाओं पर रखे और एक बार कहे 'अस्तग़्फ़िरू ल्ला–ह रब्बी व अतूबु इलैह (अपने पालने वाले से अपने पापों की क्षमा चाहता हूं) फिर पुनः सजदे में जाकर पहले की भांति 3 बार कहे 'सुब्हा–न रब्बि–यल आला व बिहम्दिही' फिर सजदे से सिर उठाये और बैठे और 'बि हौलिल्लाहि व–कूवति ही अक़ूमु व अक़उद कह कर खड़ा हो जाए (और मैं उसी की शक्ति से खड़ा होता हूं तथा बैठता हूं) प्रथम रकात समाप्त हुई।

f}rh; jdkr%&प्रथम रकात की भांति बिस्मिल्लाहि र्रहमानिर् रहीम' कह कर 'अलहम्द' का सूरा पढ़े उसके बाद कुलहु वल्लाह का सूरा पढ़ें।
बिसिमिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम ''कुल हुवल्लाहो अहद, अल्लाहुस्समद, लम् यलिद वलम् यूलद, वलम यकुल्लहु कुफ़वन अ–हद।''

vuqokn%&कह दो ए रसूल कि अल्लाह एक है और वह बेनियाज़ आवश्यकताओं से परे हैः किसी से कुछ नहीं चाहता) कोई उससे पैदा नहीं हुआ और न वह किसी से उत्पन्न हुआ (न वह जनक है, न जनित) और न कोई उसके जैसा है।'

इसके पश्चात दोनों हाथों की हथेलियों को मुख तक उठाए और दुआ–ए–कुनूत पढ़े।
''रब्बनग़फिर्ली वलि वालिदय्या वलिलमोंमिनी–न, यौ–म यक़ूमुल हिसाब। अल्लाहुम्मग़फिरलना वर्हम्ना व आफ़िना व अफ़ू–अन्ना फिद् दुन्या वल् आखिरह इन्न्–क अला कुल्लि शैइन क़दीर।'

vuqokn%&ऐ हमारे पालने वाले प्रलय के दिन हमको और हमारे माता पिता तथा समस्त मोमिनों को बख्श दे (गुनाहों को ढांप दे) और लोक तथा परलोक में सुख प्रदान कर और परलोक में, निस्सन्देह तू प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है।
कुनूत के समाप्त होते ही तुरन्त यह दरूद पढ़े :–
''अल्ला–हुम्–म स्वल्ले अला मुहम्मदि–व व आलि मुहम्मद।''

vuqokn %&ऐ अल्लाह मुहम्मद और उनके वंशज पर सलवात हो।

इसके पश्चात प्रथम रकात की भांति रूकू और सजदा करे जब सजदे से सिर उठाए अल्लाहु अकबर कहकर दो ज़ानू होकर बैठे और इस प्रकार तशहहुद पढ़ेः–

'अश्–हदु अल्ला–इला–ह इल्लल्लाहु वह–दहु लाशरी–क लहू व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अबद–हु व रसूलुहु अल्ला हुम्–म सल्लि अला मुहम्मदिव व आलि मुहम्मद।'

vuqokn%&गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य खुदा नहीं है, वह एक है और उसका कोई

साथी (साझाी) नहीं और गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बन्दे (दास) और रसूल हैं ऐ अल्लाह ! मुहम्मद तथा उनके वंशज पर सलवात हो।

यदि नमाज़ दो रकात है तो इस के पश्चात इस प्रकार सलाम पढ़ेः–

'अस्सलामु अलै–क अय्युहन् नबीयु व रह–मतुल्लाहि व ब–रकातुह, अस्सलामु अलै–ना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन, अस्सलामु अलैकुम व रह–मतुल्लाहि व ब–रकातुह।'

vuqokn%&ऐ पैग़म्बरे खुदा ! आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमतें व बरकतें हों, सलाम हो हम पर और खुदा के नेक बन्दों पर और सलाम हो सब पर और अल्लाह की रहमत तथा उसकी बरकत हो।

यदि नमाज़ तीन रकअती अथवा चार रकअती हो तो सलाम न पढ़े और तशहहुद पढ़ कर उठ खड़ा हो और केवल 'हम्द' का सूरा या तीन बार तस्बीहाते अर्–बआ (चार तस्बीह) : 'सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर्' पढ़े और प्रथम की भांति रूकू तथा दोनों सजदे करे। यदि नमाज़ तीन रकअती है तो तीसरी रकअत के पश्चात और यदि चार रकअती है तो चौथी रकअत के पश्चात तशहहुद पढ़ करे नमाज़ समाप्त कर फिर दोनों हाथों को कान तक ले जाकर 3 बार 'अल्लाहु अकबर' कहे। तत्पश्चात 'दरूद' और तस्बीह जनाबे सय्यदा पढ़े अर्थात अल्लाहु अक्बर 34 बार, 33 बार अल्–हम्दु लिल्लाहि तथा 33 बार सुब्हानल्लाह पढ़े। फिर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अल्लाह से दुआ मांगे। दुआ मांगना अनिवार्य है।

uekt &, &vk;kr%&पांचों समय की भांति प्रत्येक व्यस्कों पर नमाज़–ए–आयात पढ़ना वाजिब (अनिवार्य) हैं यह नमाज़ निम्नलिखित अवसरों पर दो रकअत पढ़ना चाहिएः–

(1) सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण लगने पर (2) भूकम्प आने पर (3) लाल अथवा पीली आन्धी आने पर तथा अन्य कोई घटना पर जिसके कारण लोग भयभीत हों, इत्यादि।

fof/k%&प्रथम नीयत करे कि 'दो रकात नमाज़ पढ़ता हूँ सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण अथवा भूकम्प की पढता हूं वाजिब कुरबतन इलल्लाह, नियत के पश्चात तुरन्त ही अल्लाहु अक्बर कहे और हम्द का सूरा तथा दूसरा सूरा पढ़कर रूकू में जावे और रूकू के पश्चात सीधा खड़ा हो तो फिर हम्द का सूरा और दूसरा सूरा पढ़कर कुनूत पढ़े फिर (दूसरे) रूकू में जाये फिर सीधा खड़ा हो और हम्द का सूरा और दूसरा सूरा पढ़कर दूसरा कुनूत पढ़े फिर चौथे रूकू में जाए फिर सीधा खड़ा होकर हम्द का तथा दूसरा सूरा पढ़कर पांचवें रूकू में जावे और सीधा खड़ा होकर समि अल्लाहुलिमन हमिदह' कह कर खड़ा हो फिर सजदे में जाए और दो सजदे करे। फिर सीधा खड़ा होकर हम्द का सूरा तथा दूसरा सूरा पढ़े, फिर कुनूत पढ़े फिर छटे रूकू में जाय फिर प्रथम की भांति 4 रूकूअ व दो कुनूत और पढ़े फिर रूकुअ के बाद सीधा ख़ड़ा होकर 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहे' व दोनों सजदों के पश्चात तशहहुद व सलाम पढ़कर नमाज़ को समाप्त करे।'

uekt &, &e¸;r ¼o dhuekt ½

काबा की ओर मुख करके शव के समीप खड़ा हो और नीयत करे कि 'नमाज़–ए–मय्यत रिज़ाए खुदा के लिए पढ़ता हूं मैं कुरबतन इलल्लाह' और 'अल्लाहु अक्बर' कह कर यह दुआ पढ़ेः–

''अश्–हदु अल् लाइला–ह इल्लल्लाहु वह–दहु ल शरी–क लहु व अश्–हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुह'' तत्पश्चात फिर अल्लाहु अक्बर कहे और यह दुआ पढ़े ''अल्ला हुम्–म सल्लि अला मुहम्मदिन्व व आलि मुहम्मद'' तत्पश्चात तीसरी तकबीर (अल्लाहु अक्बर) कहे और यह दुआ पढ़ेः ''अल्लाहुम्मग़फिर्–लिलमोमिनी–न वल् मोमिनाति वल मुस्लिमीःन वल मुस्लिमाति'' तत्पश्चात चौथी तकबीर कहे और यह दुआ पढ़े यदि पुरूष का शव हो तो ''अल्लाहुम्मग़फ़िरलि हाज़ल मय्यित'' ओर यदि स्त्री का शव होतो ''अल्लाहुम्मग़फिरलि हाज़िहिल मय्यित'' कहे फिर पांचवी तकबीर कह कर शव की नमाज़ समाप्त करे।

uekt &, &bZn%&ईद तथा बक़रीद की नमाज़ सूर्योदय से संध्या तक है। दो रकात इस प्रकार पढ़े कि पहले में पांच कुनूत तथा दूसरी में चार कुनूत पढ़कर रूकू तथा दोनों सजदे करे फिर सलाम पढ़कर नमाज़ को समाप्त करे।

uekt &, &t ek%&जुमा (शुक्रवार) की नमाज़ दो रकात है यह दोपहर को जमाअत में पढ़े।

✦✦✦

ख़बर नामा

नूरे हिदायद फ़ाउण्डेशन में यौमे ख़ुमैनी[रह0]

4 जून 2013 ई० को रहबरे इन्क़ेलाबे इस्लामी ईरान आयतुल्लाहिल उज़्मा रुहुल्लाह ख़ुमैनी[रह०] की चौबीसवीं बरसी के मौक़े पर नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन के दफ़्तर स्थित इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब में यौमे इमाम ख़ुमैनी[रह०] मनाया गया इस मौक़े पर मुख़्तलिफ़ उलमा, उदबा और शोअरा ने अपने अपने अन्दाज़ में इमाम ख़ुमैनी की ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ पहलुओं का तज़किरा किया। जल्से की इख़्तेतामी तक़रीर असीफ़ जायसी सम्पादक मासिक शुआ-ए-अमल ने की। उन्होंने तक़रीर में कहा कि आज दुनिया के मुसलमानों का सर दुनियां में जितना भी ऊँचा है वह सिर्फ़ और सिर्फ़ इमाम ख़ुमैनी[रह०] के ज़रिये लाए हुए इन्क़ेलाबे इस्लामी ईरान का सदक़ा है। आख़िर में इमाम ख़ुमैनी[रह०] और दीगर शोहदा-ए-इन्क़ेलाबे इस्लामी के ईसाल के लिए फ़ातेहा ख़्वानी की गई।



शिया नेशन डे

13 रजब 1434 हि० को नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन में "शिया नेशन डे" मनाया गया। जिसमें मज़ामीन निगार हज़रात और शोअरा-ए-कराम ने मदहे अमीरुल मोमनीन हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम के बाद ग़ुफ़रानमआब[रह०] के कारनामों ख़ुसूसन हिन्दोस्तान में शियों की पहली नमाज़े जमाअत 13 रजब 1200 हि० और पहली नमाज़े जुमा 27 रजब 1200 हि० के क़याम का ज़िक्र किया। वाज़ेह रहे कि 13 रजब सन! 1200 हि० से ही हज़रत ग़ुफ़रानमआब[रह०] ने हिन्दोस्तान में बहैसियत क़ौम मनवाने की तहरीक शुरू की थी। मक़ाला निगार हज़रात ने हम्दे परवरदीगार व नआत सरवरे कायनात स० के बाद ग़ैर मुन्क़सम हिन्दोस्तान में ग़ुफ़रानमआब का पहली बार नमाज़े जुमा के क़ायम करने का मोहक़क़ाना अन्दाज़ में तज़किरा किया।

ग़ुफ़रानमआब[रह०] की तहरीक

1. अपने अक़ाएद समझो। 2. अपने मज़हबी आमाल बजा लाओ। 3. अपनी मज़हबी हैसियत के इज़हार में सोच विचार न करो। ये ऐसी तहरीक है जिसे हर वक़्त ज़िन्दा रखने की ज़रूरत है और इसी तहरीक ने हिन्दुस्तान में शियों के वजूद को ज़ाहिर किया। बेहतर है कि हम सब 13 रजब को थोड़े ही वक़्त के लिए "शिया नेशन डे" मनायें और इस तहरीक को ज़िन्दा करें। ग़ुफ़रानमआब[रह०] की तहरीक में दूसरे मज़ाहिब से ख़िताब नहीं था आज भी उसी तरह तहरीक को चलाने की ज़रूरत है।

हज़रत ग़ुफ़रानमआब[रह0] का देसा

19 रजब 1434 हि० को हज़रत ग़ुफ़रानमआब की तारीख़े वफ़ात पर मुजद्दिदे मिल्लत आयतुल्लाहिल उज़्मा सै० दिलदार अली नक़वी ग़ुफ़रानमआब (मुतवफ़्फ़ी 1235 हि०) के ईसाले सवाब के लिए मजलिसे अज़ा-ए-सैय्यदुश्शोहदा[अ०], ख़ुद ग़ुफ़रानमआब[र०अ०] के तामीर कराए हुए इमामबाड़े में हुई। जिसे मौलाना सै० तक़ी रज़ा साहब ने ख़िताब फ़रमाया। मजलिस में बड़ी तादाद में मोमिनीन ने शिरकत की और मजलिस के आख़िर में वक़्फ़ हज़रत ग़ुफ़रानमआब[र०अ०] की तरफ़ से मोमिनीन के लिए खाने का इन्तिज़ाम भी किया गया।



विश्व स्तर पर मुसलमानों का नरसंहार जारी हैः क़ायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जव्वाद

बर्मा, शाम और ईराक़ में हो रहे मज़ालिम पर अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की दृष्टि क्यों नही जाती?

अति खेदजनक बात है कि अभी तक बर्मा और म्यांमार में मुसलमानों पर उत्पीड़न का सिलसिला कम नहीं हुआ है। मीडिया से प्राप्त जानकारी के अनुसार बर्मा में मुसलमानों की इबादतगाहें (पूजा स्थलों) ध्वस्त कर दी गयी हैं और उनके अवक़ाफ चरागाहों में बदल गये हैं। उनके खेत खलियानों पर क़ब्जा कर लिया गया है और प्रति दिन उग्रवादी उनकी औरतों और बच्चों के साथ जियादतियां कर रहे हैं, परन्तु आचर्य होता है कि सम्पूर्ण विश्व में मानव अधिकार की सुरक्षा संगठनें इस बरबरीयत पर खामोश हैं। यही स्तिथि शाम, बहरैन और ईराक़ की है, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय संगठन जिसकी हैसियत जीवित लाश से ज्यादा नहीं है न मालूम कब अपनी खामोशी तोड़ेगी। इस आशय का प्रकट मौलाना कल्बे जव्वाद नकवी साहब ने 21 जूलाई 2013 ई० को आसिफी मस्जिद में नमाज़े जुमा के वक्तव्य (खुतबा) में हज़ारों नमाज़ियों को सम्बोधित करते हुए किया। मौलान ने कहा कि ''यदि विव में सैलाब या जलज़ला आ जाए, सोनामी का कहर बर्पा हो या किसी की इज्जत लूट ली जाये तो मीडिया इस घटना को नाना प्रकर से विव के सामने पो करती है। मानव अधिकार की सुरक्षा संगठनें ऐसे प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करती है और अपने द्वारा हर सम्भव प्रयत्न करती हैं। विश्व स्तर पर आये सैलाब और जलजलों में हुई बर्बादियों के जब्र उन के लिए विव ाक्तियों के साथ अन्तर्राश्ट्रीय संगठन ने भी सहायता की पेशकश की थी लेकिन क्या मीडिया, मानव अधिकार की संगठनें और विव स्तरीय ाक्तियों नीज़ अन्तर्राष्ट्रीय संगठन को बर्मा, शाम बहरीन और ईराक में मुसलमानों, विोशकर शियों के नर हत्या की घटनायें नज़र नहीं आतीं। उन्होने कहा कि ईराक और शाम में जुल्म व बर्बरीयत की हद हो गयी लेकिन अभी तक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन अथवा किसी मानव अधिकार के संगठन की तरफ से किसी प्रकार की कोई पेशकश नहीं हुयी जो इन संस्थाओं पर सवालिया निाान है। हां शामी उपद्रवियों की मदद के लिए अमरीका और इत्तेहादी शाक्तियां सामने आ जाती हैं। अमरीका ने तो यहां तक कह दिया है कि शाम में केमिकल हथियारों का प्रयोग हुआ है। जो नियम के विरूद्ध है अतः हम बाग़ियों को हथियारों की सप्लाई करेंगे जबकि अमरीका ने प्रत्येक युद्ध में खास तौर पर ईराक़ की जंग में केमिकल हथियारों का अधिकता से प्रयोग किया। आज भी ईरान के अस्पतालों में केमिकल हथियारों प्रभावित लोग मौजूद हैं। अन्त में क़ायदे मिल्लत ने मानव अधिकार की विश्वस्तरीय संगठनों और अन्तर्राष्ट्रीय संगठन से अह्वान किया कि वह नींद से जाग्रित हों और मुसलमानों की नर हत्या की घटनाओं के विरूद्ध ज़बान खोलें।

अधिकृत बैतुल-मक़दिस में 93000 फिलस्तीनियों को घर रहित करने की इस्राइली स्कीम

बैतुल-मक़दिस में सम्भवतः 93000 फिलस्तीनी लोगों के घर रहित होने का ख़तरा हो गया है। विश्व उर्दू न्यूज एजेन्सी ''न्यूज़ नूर'' की रिपोर्ट के अनुसार 17 जूलाई को सैहूनी अधिकारियों ने मध्य बैतुल-मक़दिस में फिलास्तीनियों की व्यापारिक और आवासीय बिल्ड़िगों के ध्वस्त करने का आदेश जारी किया है। सैहूनी पुलिस और कार्पोरेशन के अधिाकारियों ने अधिकृत बैतुल-मक़दिस के सिलवान क्षेत्र के मकानो को ध्वस्त करने का आदेश जारी करने से पूर्व उस क्षेत्र की भली भांति जांच की। अनुमानतः 15 दिन पूर्व सैहूनी शासन ने साराफन्दी, अलबिना और सियाम खानदानों के मकानों को घ्वस्त करने का आदेश जारी किया था। अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की रिपोर्ट के अनुसार इस्राइल के इस आक्रामक कदम से सम्भवतः 93000 फिलस्तीनियों के बे घर होन का खतरा हो गया है।

(पेज नं० *7* का बाक़िया...............)

और ख़ास तौर से सिर्फ़ शियों में यह बात थी और दूसरे लोग उसमें ढ़ील बरतते थे लेकिन उसके बाद हमारी देखा देखी दूसरों ने ये अच्छाईयाँ अपना गुण ली और हमने आसानी और मौज मस्ती में पड़ कर अपने इस गुण को खो दिया।

इस बात को समझ लेना चाहिए कि अगर कोई नमाज़ के पहले वक़्त का कड़ाई से नियमित है तो उसके सब काम ठीक वक़्त पर कर सके पूरे होगें, उसे अपने कामों में तरतीब श्रम और सिस्टम (Discipline) की आदत होगी और इस तरह बहुत से काम वह क़ायदे के साथ कर सकेगा। लेकिन अगर नमाज़ के वक़्त पर पढ़ने का नियमित नहीं है तो फिर अपने किसी काम में भी वह वक़्त की परवाह (Punctuality) नहीं कर सकता। इसका नतीजा होगा, कामों बेढ़ंगापन और वक़्त की बरबादी।